पलकां के शैल-चित्र

*डॉ. सविता वर्मा

मनुष्य ने पृथ्वी पर जन्म लेने के पष्चात् अपनी असहाय स्थिति को देखा प्रकृति की महान शक्तियों के सम्मुख उसकी नगण्य चेतना जागृत हुई और उसने उदर की क्षुधा को शान्त करने के लिए शरीर को ताप और वर्षा से सुरक्षित रखने के लिये, तथा भयंकर पषुओं से सुरक्षा करने के लिये अनेक प्रयत्न किये । उसने पर्वतों की कन्दराओं को गर्म व प्रकाषित करने के लिए पषुओं की चर्बी तथा लकड़ी को जलाया, उसने गुफाओं के धुमिल प्रकाष से अपने जीवन की सरस तथा सरल अभिव्यक्ति तूलिका के माध्यम से खुरदरी चट्टानों, गुफाओं की दीवारों तथा चट्टानों के ऊपरी भागों पर चित्रों के रूप में अंकित किये। ऐसे ही शैल चित्रों का भण्डार हमें पलकां में देखने को मिलता है। राजस्थान में बून्दी जिला मुख्यालय से 45 कि0मी0 दूर स्थित पलकां नामक एक छोटा सा गांव है जहॉं भील आदिवासी जाति के लोगों का बाहुल्य है, कुछ गुर्जर एवं अन्य जाति के परिवार भी इस गांव में रहते है। यह गांव पहाड़ की तलहटी में बसा है एवं बरड़ क्षेत्र का हिस्सा है इसी बरड़ क्षेत्र में प्रागेतिहासिक काल की अनेकों शैल–चित्र श्रृंखलाएं है, जो अपने अतीत की स्वर्णिम गाथा कहते हुए अविचल खड़े है। प्रकृति के हाथों तराषी गई ये चट्टानें अपने में प्रागेतिहासिक कला की अमिट रेखाएं समेटे हुए है और आदि मानव की उस संघर्षरत अवस्था की ओर संकेत करती है, जब वह आखेटक अवस्था में यहॉं विचरण करता था। गांव के ठीक सामने की पहाड़ियों में एक प्राचीन नाला है, उसी पहाड़ी नाले में कई शैलाश्रय (Rock Sheltar) है, जिनमें तीन शैलाश्रयों में शैल चित्र दिखाई देते है। यह शैल–चित्र अधिकांष लाल व गेरू रंग के है। कुछ चित्र कत्थई रंगों के भी दिखाई पड़ते है। शैल चित्रों के निर्माण में काम में आने वाला रंग इन्ही (बरड़) की पहाड़ियों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जिसे हेमेटाइट कहते है। यहॉं के ग्रामीण इस हेमेटाइट को पौपल्या के नाम से जानते है। यहॉं के लोग आज भी अपने घरों की दीवारों, चूल्हों, आंगन इत्यादि पर इसी (2)पौपल्या पत्थरों को पीस कर रंग तैयार करते है एवं खजूर या बॉंस की टहनी के ब्रुष बनाकर माण्डनों व चित्रकारी से सजाते है। बून्दी जिले का बरड़ गांव ऐसे ही अलंकृत मांड़नों से सुसज्जित है।

पलकां गांव के समीप नाले में जिन तीन शैलाश्रयों में जो शैल चित्र है वह हेमेटाइट (पौपल्या) से ही निर्मित हैं, इन शैलाश्रयों में मानवाकृतियॉं, हिरण, बैल, गाय, वन्य जीव तथा कुछ स्वास्तिक चिन्ह भी अंकित है कुछ गोल पहिये नुमा आकृतियां भी मिली है इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इस समय कृषियुग का आरम्भ हो गया था शायद यही कारण रहा होगा कि उन्होने पहिये को चित्रित किया। इनमें अधिकांष चित्र प्रागेतिहासिक काल के है। पलकां के शैल चित्रों में बब्बर शेर की आकृति भी देखी गई जिसमें गर्दन पर बहुत सारे बालों को दर्षाया गया है इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि आदि मानव ने उस समय बब्बर शैर यानि (Lion) को अवष्य देखा होगा, तभी उसका चित्र उनके मस्तिश्क पटल पर आया होगा । ऐसा प्रतित होता है कि इस भू–भाग में कभी बब्बर शेरों का निवास हुआ करता था। मानव शास्त्रियों का यह मत है कि मानव आदिकाल से ही कला प्रेमी रहा है और उसने अपने सीमित साधनों द्वारा अपने कला प्रेम को अभिव्यक्त किया है। शेल चित्र मानव के इस कला प्रेम के प्रथम साक्षी है। आदि मानव की गतिविधियॉं सीमित थी वह एकाकी था प्राकृतिक, वनस्पति तथा जीव–जन्तु ही उसका खाद्य होते थे, उसका अपना कोई समाज नहीं था। एक तरह से देखा जाए तो उसका मुख्य कार्य आखेट करना ही था । अतः पषु ही उसके आकर्षण का मुख्य केन्द्र था। यह माना गया है कि कला का जन्म (उद्‌भव) मानव की आखेट अवस्था से सम्बन्धित है। आदि मानव ने जब अपने बुद्धि कौषल द्वारा पाषाणास्त्रों का निर्माण किया तभी से उसमें पषुओं के प्रति स्वयं में श्रेष्ठता की भावना का उदय हुआ, और उसने पषुओं व आखेट दृष्यों का अंकन कर अपनी श्रेष्ठता, भय, उत्सुकता

*व्याख्याता चित्रकला, राजकीय महाविद्यालय, कोटा

तथा पषुओं के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्षित किया । (3)पलकां में पषु चित्रों को प्रधानता दी गई है चित्रांकन में यर्थाथता नहीं है परन्तु सहजता है। अधिकतर चित्र एक चष्म है। पलकां स्थित शैल–चित्र स्थलों के समीप प्रागेतिहासिक काल के मानव के इस भू–भाग में रहने के अनेकों प्रमाण मिलते है, इस भू–भाग में प्रस्तर उपकरण औजार प्रचुर मात्रा में, जमीन पर बिखरे व दबे मिले है, जिनका उपयोग वह मॉस काटने, वनस्पति को काटने चीरने के कार्य के उपयोग में लेता था। पलकां के शेल–चित्र शैलाश्रयों के समीप की पहाड़ियों में उत्तर पाषाण कालीन लघुपाषाण उपकरण एवं अपषिष्ट भारी मात्रा में दृष्टव्य

होते है, उपकरणों का प्रयोग वह तीर कमान के इस्तेमाल में करता था। इसी प्रकार यहाँ माइक्रोलिथिक, उत्तर पाषाण कालीन उपकरण के साथ–साथ मिडिल पैत्योलिथिक उपकरण का प्रयोग वह दैनिक जीवन में आने वाले कार्यो को पूर्ण कर लेता था। पलकां नामक ग्राम के समीप के इन शैल चित्रों की खोज पुराअन्वेशी ओम प्रकाष (कुक्की) द्वारा 27 नवम्बर 1999 में की गई थी । पलकां में तीन शैलाश्रय है, प्रथम शैलाश्रय उत्तर मुखी है, जिसमें प्रागेतिहासिक चित्रों के साथ–साथ कुछ ऐतिहासिक काल के चित्र भी है। द्वितीय शैलाश्रय पूर्व मुखा है एवं बहुत बड़ा भी, इसमें कई आकृतियॉ है जिसमें मानवाकृतियॉ, वन्य जीव, षिकार एवं षिकारी के चित्र है। इस शैलाश्रय के समीप ही एक विषाल बरगद का वृक्ष है, जिसके पास ध्वस्त मंदिर भी है यहाँ एक नंदी की प्रतिमा है जिसमें सुन्दर नक्काषी की गई है। पलकां के इन शैल–चित्रों देखकर सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि ये शैल चित्र मानव की आखेटक अवस्था से ही सम्बन्धित है। शैली, रंगों की सीमितता, अंकन पद्धति, विषम वस्तु व चित्रों की अवस्था के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ये चित्र चार से पांच हजार वर्ष पूर्व के रहे होंगे ।